

॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ तत्कर्मकर्णविजयपुरेऽब्दोषयामास ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ अभ्युदितेभ्योऽपि उदिताः श्रेष्ठतमाः ॥ २७ ॥ २८ ॥ हलहलाशब्दं हाहाकारं कर्णनिदां च पाण्डवपक्षपातिन
भद्रानरोहितकांश्चैव आग्नेयान्मालवानपि ॥ गणान्सर्वान्विनिर्जित्य नीतिरुत्पहसन्निव ॥ २० ॥ शशकान्यवनांश्चैव विजिग्येसूतनन्दनः ॥ नम्रजित्स्त्रमुखांश्चै
व गणान्जित्त्वामहारथान् ॥ २१ ॥ एवं सपृथिवीं सर्वां वशं कृत्वा महारथः ॥ विजित्य पुरुषव्याघ्रो नागसाङ्क्यमागमत् ॥ २२ ॥ तमागतं महेश्वासं धातुराष्टौ ज
नाधिपः ॥ प्रत्युद्रम्य महाराज सभ्रातृपितृबांधवः ॥ २३ ॥ अर्चयामास विधिना कर्णमाहवशो भिनं ॥ आश्रावयच्च तत्कर्मप्रीयमाणो जनेश्वरः ॥ २४ ॥ यन्न
भीष्मान्न च द्रोणान्न रूपान्न च बाल्हिकात् ॥ प्राप्तवानस्मि भद्रं ते तत्तः प्राप्तं मया हितम् ॥ २५ ॥ बहुना च किमु तेन शृणु कर्णवचो मम ॥ सनाथोऽस्मि महाबाहो त्व
यानाथेन सत्तम ॥ २६ ॥ न हिते पाण्डवाः सर्वे कलामर्हति षोडशीं ॥ अन्ये वा पुरुषव्याघ्रराजानो भ्युदितो दिताः ॥ २७ ॥ स भवानधृतराष्ट्रं तं गांधारीच यशस्वि
नीं ॥ पश्य कर्णमहेश्वासं अदितिं वज्रभृद्यथा ॥ २८ ॥ ततो हलहलाशब्दः प्रादुरासीद्विशोऽपते ॥ हाहाकाराश्च बहवो नगरे नागसाङ्क्ये ॥ २९ ॥ केचिदेनं प्रशंसन्ति
निंदन्ति स्म तथापरे ॥ तूष्णीमासंस्तथा चान्ये नृपास्तत्र जनाधिप ॥ ३० ॥ एवं विजित्य राजेन्द्र कर्णः शस्त्रभृतां वरः ॥ स पर्वतवनाकाशांससमुद्रांसनिष्कुटां ॥
॥ ३१ ॥ देशैरुच्चावचैः पूर्णपित्तनैर्नगरेरपि ॥ द्वैपैश्चानूपसंपूर्णैः पृथिवीं पृथिवीपते ॥ ३२ ॥ कालेन नातिदीर्घेण वशे कृत्वा तु पार्थिवान् ॥ अक्षयं धनमादाय सू
तजोनृपमभ्ययात् ॥ ३३ ॥ प्रविश्य च गृहं राजन् भयं तरमरिंदम ॥ गांधारीसहितं वीरो धृतराष्ट्रं दर्शयः ॥ ३४ ॥ पुत्रवच्च नरव्याघ्रपादौ जग्राह धर्मवित् ॥ धृतराष्ट्रे
ण चाश्लेष्य प्रेम्णा चापि विसर्जितः ॥ ३५ ॥ तदा प्रभृति राजा च शकुनिश्चापि सौबलः ॥ जानते निर्जितान्याथान् कर्णेन युधिभारत ॥ ३६ ॥ इति श्रीम ० आर
ण्यके प ० घोषयात्राप ० कर्णदिग्विजये चतुष्पंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥ २५४ ॥ ॥ ३७ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ जित्वा तु पृथि
वीं राजन् सूतपुत्रो जनाधिप ॥ अब्रवीत् परवीरघ्नो दुर्योधनमिदं वचः ॥ १ ॥ कर्ण उवाच ॥ दुर्योधननिबोधेदं यत्त्वां वक्ष्यामि कैरव ॥ श्रुत्वा वाचं तथा सर्वक
र्तुमर्हस्यरिंदम ॥ २ ॥ तवाद्यपि वीरिनिःसपत्नानृपोत्तम ॥ तां पालय यथा शक्रो हतशत्रुर्महामनाः ॥ ३ ॥

श्वक्रुरित्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ आकाशः पर्वतवनयोरंतरालं सस्याद्युत्पत्तिभूमित्यर्थः ॥ ३१ ॥ अनूपं सर्वतो जलं तेन संपूर्णैः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ इत्यारण्यके पर्वणि नैलकंठीये
भारतप्रावदीपे चतुष्पंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥ २५४ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥